

शिस्तक - रवि शंकर राय, विषय - अर्थशास्त्र  
दिनांक - 11-11-2020, वर्ग - M.A.-II

## व्याज दर का सिद्धान्त Theory of Interest Rate

व्याज का क्लासिकल सिद्धान्त (Classical Theory of Interest)

व्याज के बारे में सबसे पहले सिद्धान्त को क्लासिकल अथवा वास्तविक सिद्धान्त कहते हैं। इसे वास्तविक सिद्धान्त इसलिए कहते हैं, क्योंकि यह वास्तविक कारकों जैसे कि पूँजी की उत्पादकता (productivity of capital), बचत की प्रवृत्ति आदि पर आधारित है। क्लासिकल सिद्धान्त के अन्तर्गत हम दो बातों की व्याख्या करेंगे, प्रथम, यह कि व्याज दर उत्पन्न क्यों होती है। दूसरा, यह कि इसके अनुसार व्याज की दर का निर्धारण किस प्रकार होता है।

व्याज क्यों उत्पन्न होता है? (Why does rate of interest arise)

व्याज क्यों उत्पन्न होता है, के बारे में विभिन्न क्लासिकल अर्थशास्त्रीयों का अलग अलग मत है। इसके बारे में कई सिद्धान्त प्रस्तुत किए गए जिनका विवेचन हम आगे कर रहे हैं।  
उपभोग स्थगन तथा प्रतीक्षा सिद्धान्त

(Abstinence and waiting theory) — उपभोग  
स्वयं का सिद्धांत प्रसिद्ध अर्थशास्त्री वीनियर ने  
प्रतिपादित किया। उनके विचार में व्यय करने में  
व्यक्ति कुछ व्यय करता है और यह लाग है उपभोग  
का स्वयं। व्यक्ति को उपभोग का स्वयं करने को  
प्रेरित करने के लिए कुछ पुरस्कार मिलना चाहिए  
और यह पुरस्कार व्यय ही हैं। अतः इस सिद्धांत  
के अनुसार व्यय उपभोग के स्वयं का उल्टाकार  
है।

व्यय का वरदा सिद्धांत (Agiro Theory) — यह  
सिद्धांत आस्ट्रियन अर्थशास्त्री बॉम बॉवर्क ने  
(Bohm Bawerk) ने प्रस्तुत किया। उसके अनुसार  
व्यय इसलिए उत्पन्न होता है क्योंकि मानव  
भावी उपभोग की अपेक्षा वर्तमान उपभोग को  
अधिक पसंद करता है। मनुष्य अपनी भावी  
आवश्यकताओं को वर्तमान आवश्यकताओं की  
तुलना में कम महत्व देता है। व्यय वह प्रलेभन  
है जो मनुष्य को अपने वर्तमान उपभोग को  
भविष्य के किसी समय तक स्वयं करने के लिए  
दिया जाता है।

फिशर का समय आधिमान्यता सिद्धांत  
(Time preference Theory of Fisher) —

इस सिद्धान्त को इविन फिशर ने प्रस्तुत किया।  
व्याज को दिया जाता है कि व्याज फिशर  
समय अधिमानीयता (time preference) द्वारा करता  
है।

क्लासिकल सिद्धान्त के अनुसार व्याज का  
निर्धारण (Determination of Rate of Interest a-  
ccording to classical Theory).

क्लासिकल सिद्धान्त के अनुसार  
व्याज दर निवेश के लिए बचत की मांग तथा  
बचत की पूर्ति द्वारा निर्धारित होती है। बाजार  
में व्याज की वह दर निर्धारित होगी जिस पर  
कि बचत की मांग (demand for saving) और  
बचत की पूर्ति (supply of saving) संतुलन में  
है।

निवेश के लिए मांग (Demand for invest-  
ment) - पूंजी की मांग निवेशकों द्वारा की  
जाती है। निवेशकों द्वारा पूंजी की मांग इसलिए  
की जाती है क्योंकि पूंजी उत्पादक होती है। पूंजी  
की मांग, व्याज दर पर निर्भर करती है। व्याज  
की उंची दर पर पूंजी की मांग कम और  
व्याज की नीची दर पर पूंजी की मांग अधिक  
होती है। इस प्रकार दोनों के बीच विरोध

का सम्बन्ध होता है। और पूँजी की माँग वक्र  
अथवा निवेश के लिए बचतों का माँग वक्र  
बायें से दायें नीचे की ओर ढलता होता है।

बचतों की पूर्ति (Supply of saving) -

— निवेश के लिए पूँजी की पूर्ति बचत पर  
निर्भर करती है। बचत की दर व्याज पर निर्भर  
करती है। कम व्याज की दर पर कम मात्रा  
में बचत की पूर्ति होगी और उँची व्याज की  
दर पर अधिक मात्रा में बचत की पूर्ति होगी।  
अतः बचत पूर्ति वक्र अथवा पूँजी पूर्ति वक्र  
बायें से दायें उपर की ओर चढ़ता हुआ होता  
है।